Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

गद्यांश

(1) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी – हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है— तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

अथवा **ममता विधवा...अन्त था?**

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक ‘जयशंकर प्रसाद जी'**हैं**|

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – जिस प्रकार सोन नदी उफनकर बह रही है, उसी प्रकार ममता का यौवन भी पूरी तरह उफान पर है। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री है। वह हर प्रकार के भौतिक सुख से सम्पन्न है, फिर भी हिन्दू-विधवा-जीवन के कठोर अभिशाप से उसका मन तरह-तरह के विचारों और भावों की आंधी से भरा हुआ है। उसकी आँखों से दुःख के आँसू बह रहे हैं। काँटों की शय्या

पर सोनेवाला व्यक्ति जिस प्रकार हर पल बेचैन रहता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के भौतिक सुखों के रहते हुए भी ममता का जीवन कष्टदायक सिद्ध हो रहा है।

प्रश्न- (iii)रोहतास-दुर्ग कहाँ स्थित है?

उत्तर- रोहतास-दुर्ग सोन नदी के तट पर स्थित है।

प्रश्न- (iv)ममता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्ग के दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री थी। वह युवा और विधवा थी। उसके मन-मस्तिष्क में विरह-वेदना के कारण उथल-पुथल मची थी, जिस कारण उसकी आँखों में दुःख के आँसू थे।

प्रश्न- (v)उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

उत्तर- समाज में हिन्दू-विधवा की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती है। उसे समाज का सबसे तुच्छ (दीन-हीन) और बेसहारा प्राणी माना जाता है।

प्रश्न- (vi)ममता कौन थी? वह क्या देख रही थी?

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की विधवा पुत्री थी। वह अपने यौवन के समान उमड़ते शोण नदी के तीक्ष्ण प्रवाह को देख रही थी।

(2) "हे भगवान् ! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ- इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'ममता'से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकरप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – ममता कहती है, हे भगवान् ! मेरे इस पिता को धिक्कार है, जिसने मुसीबत के समय के लिए अपना ईमान-धर्म बेचकर घूस के रूप में यह विपुल स्वर्णराशि प्राप्त की है। इस विपत्ति को देनेवाला परम शक्तिशाली परमपिता परमात्मा ही तो है, जो सारे संसार का संचालन करता है। जब उसने विपत्ति दी है तो उसे किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता, यदि हम उसके विरुद्ध कुछ करते हैं तो

यह हमारा उसके प्रति दुस्साहस ही तो है। वह अपने पिता से कहती है कि पिताजी! आपने यह अच्छा कार्य नहीं किया। यदि भविष्य में विपत्ति आती भी तो हम भीख माँगकर अपना पेट पाल सकते थे, इस घूस लेने से तो वह भीख माँगना कहीं श्रेष्ठ होता। क्या आपको इस संसार पर यह भी भरोसा नहीं रहा कि कल को भिखारी को भीख भी न मिलेगी।

प्रश्न- (iii) 'विपद के लिए! इतना आयोजन!' यहाँ 'इतना आयोजन' के द्वारा किस आयोजन की बात की गई है?

उत्तर- ममता के पिता चूड़ामणि ने उसके भविष्य की चिन्ता करते हुए उसे दस थाल भरकर सोना उपहार में दिया। चूड़ामणि को यह सोना उत्कोच के रूप में प्राप्त हुआ था। चूड़ामणि के इसी उत्कोच की बात 'इतना आयोजन'के द्वारा की गई है।

प्रश्न- (iv) चूड़ामणि ने ऐसा क्या किया, जो ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?

अथवा **अपने पिता का कौन-सा कृत्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?**

उत्तर- चूड़ामणि ने ममता के लिए उत्कोच के रूप में स्वीकार किया गया दस थाल सोना भरकर उपहार में प्रदान किया। उनका यही कार्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा।

प्रश्न-(v) इस गद्यांश से ममता की किस मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है?

उत्तर- इस गद्यांश से ममता की भाग्यवादी **अथवा** ईश्वरवादी मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न-(vi) उपर्युक्त गद्यांश में किस कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है?

उत्तर- उपर्युक्त गद्यांश में उत्कोच द्वारा धन-संचय के कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है।

(3) अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा- "मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था, या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही।

भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर- विश्राम गृह में जाती हूँ।' [801 (DB) 2023]

अथवा **"मैं नहीं जानती..............................में जाती हूँ।"**

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-मरणासन्न ममता अश्वारोही को बताती है कि उस व्यक्ति के जाते समय मैंने सुना था कि वह अपने किसी आदमी को मेरा घर बनवाने की

आज्ञा दे रहा था। उस दिन से आज तक मुझे यही भय सताता रहा कि पता नहीं कब कोई आकर मेरी इस झोपड़ी को गिराकर और इस स्थान को खुदवाकर मकान बनवा दे। मैं नहीं चाहती थी कि कोई इसे गिराकर इसके स्थान पर मकान बनवा दे, यही मेरे भयभीत होने का कारण था। शायद भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी, इसीलिए आज तक यहाँ कोई मकान बनवाने नहीं आया। अब मेरा समय पूरा हो गया है। मैं इसे छोडे परमधाम को जा रही हूँ।

प्रश्न- (iii)अश्वारोही ममता की झोपड़ी ढूँढता हुआ क्यों आया?

उत्तर- अश्वारोही ममता की झोपड़ी को ढूँढता हुआ इसलिए आया था; क्योंकि उसे उसकी झोपड़ी के स्थान पर मकान बनवाने का आदेश मिला था।

प्रश्न- (iv) वह आजीवन क्यों भयभीत रही?

अथवा **आजीवन भयभीत रहने का कारण लिखिए।**

उत्तर- ममता आजीवन अपनी झोपडी खोदे जाने के डर से भयभीत रही, क्योंकि उसमें एक दिन के लिए विश्राम करनेवाले किसी मुगल ने उसके स्थान पर घर बनवाने का आदेश दिया था।

प्रश्न- (v)भगवान् ने ममता की कौन-सी बात सुन ली?

उत्तर- भगवान् ने ममता की झोपड़ी न गिराए जाने की बात सुन ली।

प्रश्न- (vi) 'चिर-विश्राम गृह' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- चिर- विश्राम गृह'का आशय स्वर्गलोक से है।

(4) काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खण्डहर था । भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी । जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी "अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।"

[801 (DD) 2023]

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड' के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि काशी के उत्तर में अनेक बौद्ध स्मारक हैं। इन स्मारकों को मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की शान बढ़ाने के लिए बनवाया गया था। ये स्मारक अब टूट-फूट चुके हैं। इनकी टूटी-फूटी चोटियाँ, दीवारें, कंगूरे खण्डहर बन गए हैं। इन पर झाड़ियाँ उग आई हैं, पत्ते बिखरे हैं। इन खण्डहरों को देखकर ऐसा लगता है मानो ईंट के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्पकला की आत्मा ग्रीष्म ऋतु की चाँदनी से स्वयं को शीतलता प्रदान कर रही थी।

प्रश्न- (iii) धर्मचक्र कहाँ स्थित था ?

उत्तर- काशी के उत्तर में।

प्रश्न- (iv) पंचवर्गीय भिक्षु कौन थे? ये गौतम से क्यों और कहाँ मिले थे?

उत्तर- पंचवर्गीय भिक्षु गौतम बुद्ध के प्रथम पाँच शिष्य थे, ये पाँचों शिष्य गौतम बुद्ध से उपदेश ग्रहण करने के लिए काशी के उत्तर में स्थित उन खण्डहरों में मिले थे, जो सारनाथ नामक स्थान पर स्थित है।

प्रश्न –(vi) "अनन्याश्चिन्तयन्तों मां ये जनाः पर्युपासते।" का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, कि जो भक्त अनन्य भाव से मेरा चिन्तन करते हुए जो मेरी ही उपासना करते हैं, (उन नित्ययुक्त पुरुषों का योगक्षेम मैं वहन करता हूँ।)

(5) **"मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म-अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ नहीं-नहीं सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं कर्तव्य करना है।**

तब ?” मुग़ल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा "क्या आश्चर्य है कि तुम भी -छल करो, ठहरो।” “छल! नहीं तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।" [801 (DF) 2023]

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम- 'ममता' तथा लेखक 'जयशंकर प्रसाद' जी हैं।

प्रश्न- (ii) “छल ! नहीं तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ ।” वाक्य किसने कहा और क्यों कहा?

उत्तर- "छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ।" यह कथन हुमायूँ द्वारा ममता से कहा गया, हुमायूँ ने कहा तैमूरवंशी कुछ भी कर सकते हैं, परन्तु किसी स्त्री के साथ छल कभी नहीं कर सकते।

प्रश्न- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – प्रसाद जी कहते हैं कि जब हुमायूँ ममता की झोंपड़ी में शरण लेता है, तब ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता है कि वह हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं। ममता मन-ही-मन विचार करती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता, इसलिए मुझे तो अपने अतिथि-

धर्म का पालन करना ही चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर उसके मन में विचार आया कि यह तो अत्याचारी, पापी है।

इन मुगलवंशियों ने तो मेरे पिताजी की हत्या की थी। यदि कोई और पापी होता तो उसके प्रति दया दिखाकर उसे सहारा दिया जा सकता था, परन्तु पिता की हत्या करने वाले को कभी नहीं। एक बार पुनः उसके मन में विचलन होना आरम्भ हो जाता है और वह कहती है-मैं इसके ऊपर दया-भाव तो नहीं दिखा रही हूँ, परन्तु अपना कर्त्तव्य निर्वाह कर रही हूँ।

प्रश्न- (iv) ममता के मन में क्या अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था?

उत्तर- ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था कि हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं।

प्रश्न- (v) ममता मन-ही-मन क्या विचारती है?

उत्तर- ममता मन-ही-मन यह विचारती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता।

प्रश्न- (vi) 'क्या आश्चर्य है कि तुम छल करो।' यह कथन किसने, किससे कहा और क्यों?

उत्तर- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो।" यह कथन ममता ने हुमायूँ से कहा, क्योंकि ममता के पिता की हत्या भी मुगलों ने छल से ही की थी।

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

(1)मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए०जी० गार्डिनर का कथन है, कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति- सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग - सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के गद्य खंड में संकलित निबंध 'क्या लिखूं?'से उद्धृत है इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - **रेखांकित अंश की व्याख्या**– अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्धकार ए.जी. गार्डिनर हुए हैं। जिन्होंने कहा है कि मन की विशेष स्थिति में ही निबन्ध लिखा जाता है। उसके लिए मन के भाव ही वास्तविक होते हैं, विषय नहीं। मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त हो सकता है। उनका कहना है कि उस समय मन में एक विशेष प्रकार का उत्साह और फुर्ती आती है। दिमाग में एक विशेष प्रकार की आवेगपूर्ण स्थिति बनती

है और उस आवेग को उमंग के कारण विषय की चिन्ता किये बिना निबन्ध लिखने को बाध्य होना ही पड़ता है।

प्रश्न-(iii) उपर्युक्त गद्यांश में मनोभावों को क्या बताया गया है?

उत्तर -मनोभावों को यथार्थ वस्तु बताया गया है।

प्रश्न-(iv) लिखने की विशेष मानसिक स्थिति कैसी होती है?

उत्तर- लिखने की विशेष मानसिक स्थिति में मन में कुछ ऐसी उमंग - सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति - सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग - सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है।

(2) ऐसे निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छन्द रचनाएं हैं। उनमें न कविता की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका - लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबन्ध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबन्ध लिखूं। पर मुझे तो दो निबन्ध लिखने होंगे।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के गद्य खंड में संकलित निबंध क्या लिखूं? से उद्धृत है इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - ऐसे निबन्ध लेखक के हृदय की बन्धनमुक्त रचनाएँ होते हैं। इसमें कवि के समान उच्च कल्पनाएँ और किसी कहानी लेखक के समान सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता नहीं होती। न ही विद्वानों के समान गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना की आवश्यकता होती है। इसमें लेखक अपने मन की सच्ची भावनाओं को स्वतन्त्रता और प्रसन्नता के साथ व्यक्त करता है। इन निबन्धों को लिखते समय लेखक पाण्डित्य-प्रदर्शन की अवस्था से भी दूर रहता है। वह अपने भावों को जिस रूप में चाहता है, उसी रूप में अभिव्यक्त करता है।

प्रश्न-(iii) उपर्युक्त गद्यांश में किस प्रकार के निबन्ध में सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है?

उत्तर - जिनमें न कविता की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका न लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति अभिव्यक्ति रहती है।

प्रश्न-(iv) निबन्ध की किन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है?

उत्तर – निबंध की स्वच्छन्दतावादी, बन्धनमुक्त शैली आदि विशेषताओं का उल्लेख हुआ है।

(3) दूर के ढोल सहावने होने हैं, क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर, संध्या समय किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशीला नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कम्पन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं,क्योंकि उसके साथ आनन्द का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं, तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती। दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यन्त मधुर बन जाती है।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के गद्य खंड में संकलित निबंध क्या लिखूं? से उद्धृत है इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश- बख्शी जी कहते है कि दूर के ढोल इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि उनकी कर्णकटु ध्वनि बहुत दूर तक नहीं पहुँचती है। जब वे बज रहे होते हैं तो पास में बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फाड़ रहे होते हैं जबकि दूर किसी नदी के किनारे सन्ध्याकालीन समय के शान्त वातावरण में बैठे हुए लोगों को अपने मधुर स्वर से प्रसन्न कर रहे होते हैं।

प्रश्न-(iii) ढोल की कर्कशता समीपस्थ लोगों को कब कटु प्रतीत नहीं होती है?

उत्तर - जब उसके साथ आनन्द का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती है।

(4) जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है, जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीत काल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असन्तोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत-गौरव के

संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के गद्य खंड में संकलित निबंध 'क्या लिखूं?'से उद्धृत है इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - जिन नौजवानों ने संसार के कष्टों, समस्याओं और कठिनाइयों का सामना नहीं किया, उन्हें यह संसार बड़ा आकर्षक और सुन्दर प्रतीत होता है, क्योंकि वे अपने उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न देखते हैं, जीवन-संघर्षों से बहुत दूर रहते हैं और दूर के ढोल तो सभी

को सुहावने लगते हैं। जो अपनी बाल्यावस्था और जवानी को पार करके अब वृद्ध हो गये हैं, वे बीते समय के गीत गाकर प्रसन्न होते हैं। नवयुवकों से भविष्य दूर होता है और वृद्धों से उनका बचपन बहुत दूर हो गया होता है। इसीलिए नवयुवकों को भविष्य तथा वृद्धों को अतीत प्रिय लगता है।

प्रश्न-(iii) तरुण और वृद्ध दोनों क्या चाहते हैं?

उत्तर - तरुण और वृद्ध दोनों ही वर्तमान से असन्तुष्ट होते हैं। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को, तरुण क्रान्ति का समर्थन करते हैं और वृद्ध अतीत के गौरव का संरक्षण।

प्रश्न-(iv) तरुण जीवन के संग्राम के अनुभव किस प्रकार से देखना चाहते हैं?

उत्तर – तरुण जीवन के संघर्षों से अत्यधिक दूर होते हैं, उनको यह संसार मनमोहक एवं आकर्षक लगता है, क्योंकि उन्होंने जीवन संग्राम का सामना नहीं किया होता है, उनको भविष्य प्रिय लगता है, इसलिए वे भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं।

प्रश्न-(v) वर्तमान सदैव क्षुब्ध क्यों रहता है?

उत्तर - तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं, तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है।

(5) मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं पर सुधारों का अन्त कब हुआ?

भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर - नगर और गाँव - गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नये - नये क्षेत्र उत्पन्न होते जाते हैं और नये - नये सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अन्त है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नवसुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर – उपर्युक्त

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश की व्याख्या- समाज विस्तृत है। इसमें सदैव सुधार होते रहते हैं। बुद्ध से गाँधी तक सुधारकों के एक बड़े समूह का जन्म इस देश में हुआ है। जीवन में दोषों की श्रृंखला बहुत लम्बी होती है। इसीलिए सुधारों का क्रम सदैव चलता रहता है। सुधारकों के दल प्रत्येक नगर और ग्राम में होते हैं। जीवन में अनेकानेक क्षेत्र होते हैं और नित नवीन उत्पन्न भी होते जाते हैं। प्रत्येक में कुछ दोष होते हैं, जिनमें सुधार अवश्यम्भावी होता है। सुधार किये जाने पर इनमें तात्कालिक सुधार तो हो जाता है परन्तु आगे चलकर कालक्रम में वे ही सुधार फिर दोष माने जाने लगते हैं और उनमें फिर से सुधार किये जाने की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। इसी सुधारक्रम और परिवर्तनशीलता से जीवन प्रगतिशील माना गया है।

प्रश्न-(iii) जीवन प्रगतिशील क्यों माना गया है?

उत्तर- जीवन में नये-नये क्षेत्र उत्पन्न होते जाते हैं और नये-नये सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अन्त है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नवसुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

(6) हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता सह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जायगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का

स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसग दल आ जाएगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर – उपर्युक्त

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- साहित्यिक सुधार की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए विद्वान लेखक श्री बख्शी जी कहते हैं कि आज के युवा लेखक भी एक दिन वृद्ध होकर अतीत का गुणगान करेंगे। उस समय के जो युवा साहित्यकार होंगे वे वर्तमान से असन्तुष्ट होकर, कोई और नया साहित्य रचने लगेंगे। वे भी भविष्य के लिए चिन्तित होंगे। यह क्रम सनातन है। युवाओं

से भविष्य दूर है और वृद्धों से अतीत, इसीलिए दोनों को ये सुखद लगते हैं। यह मानव स्वभाव है कि जो वस्तु उसकी पहुँच से दूर होती है, वह उसे अच्छी लगती है और वह उसे पाने का प्रयत्न करता रहता है। इसीलिए 'दूर के ढोल सुहावने वाली कहावत चरितार्थ हुई है।

प्रश्न-(iii) प्रगतिशील साहित्य-निर्माता क्या समझकर साहित्य निर्माण कर रहे हैं?

उत्तर- प्रगतिशील साहित्य-निर्माता यह समझकर साहित्य निर्माण कर रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है।

प्रश्न-(iv) 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं'का भावार्थ लिखिए।

उत्तर- जो वस्तु व्यक्ति की पहुँच से दूर होती है, वही उसे अच्छी लगती है और वह उसी को पाने का प्रयत्न भी करता है। इसीलिए कहा जाता है कि 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं।'

भारतीय संस्कृति

(1) **आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा।** [801 (DA) 2023]

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- भारतीय संस्कृति रूपी विशाल सागर में आकर गिरनेवाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध स्वच्छ, शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक, कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित उसी अमृत तत्त्व की तलाश

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

है, हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में यह अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, तथापि भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्त्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है।

प्रश्न- (iii)हमारे अस्तित्व को कौन कायम रखे हुए है?

उत्तर- भारतीय संस्कृति का एकता तत्त्व ही वह अमृत है, जो हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए हैं।

प्रश्न- (iv)भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल किसके द्वारा मलिन हो गया है?

उत्तर- स्वयं को दूसरे से भिन्न और श्रेष्ठ मानने की हमारी विषमता और अनेकता की भावना के द्वारा भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल मलिन हो गया है।

(2)यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके और मुरझाए हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

प्रश्न: (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ**- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- **रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या - डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्रवाले तथा धार्मिक एवं

आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गांधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गांधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है। जिस अमर तत्त्व ने भारत को नवीन जीवन और स्फूर्ति प्रदान की, वह तत्त्व है— सत्य और अहिंसा। यह तत्त्व मिटाने से भी नहीं मिटता।

प्रश्न – (iii)लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

उत्तर - लेखक ने इस गद्यांश में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को जीवन में उतारने का सन्देश दिया है।

प्रश्न – (iv)गद्यांश में नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत क्या है?

उत्तर - राष्ट्रीय एकता की भावना नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है।

प्रश्न – (v)किस मूर्त रूप के चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है?

उत्तर- गांधीजी के रूप में राष्ट्रीय एकता के मूर्त रूप में चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है।

प्रश्न – (vi)महात्मा गांधी ने कौन-सा अमरत्व हमारी सूखी हड्डियों में डाला?

अथवा **हमें अमरत्व की याद दिलाकर किसने हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके?**

उत्तर- महात्मा गांधी ने हमें सत्य और अहिंसा के अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूंके।

प्रश्न – (vii)मानवमात्र के जीवन के लिए क्या आवश्यक हो गया है?

उत्तर- मानवमात्र के जीवन के लिए सत्य और अहिंसा आवश्यक हो गए हैं।

प्रश्न – (viii) लेखक ने अमरत्व का स्रोत किसे बताया है?

उत्तर- लेखक ने अमरत्व का स्रोत सत्य और अहिंसा को बताया है।

(3) हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग ही से

निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है— 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'। इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है।

अथवा **जहाँ-जहाँ. ....ओत-प्रोत है।**

अथवा **अहिंसा का दूसरा नाम .... ओत-प्रोत है। [801 (DE) 2023]**

प्रश्न-(i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा **गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर- <u>सन्दर्भ-</u> प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - **<u>रेखांकित अंश की व्याख्या</u>** – डॉ० राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अहिंसा तत्त्व ही है। इसीलिए हमारे ग्रन्थों में जहाँ कहीं भी नैतिक सिद्धान्तों की बात कही गई है, वहाँ मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख अवश्य किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है। त्याग करना ही अहिंसा है और दूसरे रूप में अहिंसा ही त्याग है। अहिंसा और त्याग दोनों में कोई

Gyansindhu Coaching Classes Join – Whatsapp Channel By Link Subscribe for Live Class

अन्तर नहीं है। ठीक इसी प्रकार हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है। हिंसा ही स्वार्थ है और स्वार्थ का पर्याय हिंसा है। दोनों में उतना ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, जितना अहिंसा और त्याग में एक मानव दूसरे मानव को कष्ट तब पहुँचाता है, जब वह स्वार्थ के वश में हो जाता है। अतः स्वार्थ का दूसरा नाम हिंसा है और हिंसा अथवा स्वार्थ का अर्थ है— भोग। भारतीय दर्शन के अनुसार भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है और त्याग भी भोग में ही पाया जाता है। उपनिषद् में कहा गया है कि संसार का भोग, त्याग की भावना से करो। यहाँ त्याग में ही भोग माना गया है। भोग के लिए एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से झगड़ा करता है, लड़ता है और समाज में उसका विरोध करता है। भोग के कारण ही एक समाज दूसरे समाज से अथवा एक देश का दूसरे देश से संघर्ष होता है; अतः इन समस्त

विरोधों को पूरी तरह नष्ट करने के लिए त्याग की भावना का उत्पन्न होना अनिवार्य है। त्याग की भावना मन में आते ही चित्त में अपार सुख अथवा शान्ति का अनुभव होने लगता है। इस प्रकार त्याग अथवा अहिंसा भारतीय संस्कृति का वह तत्त्व है, जो संसार में व्याप्त समस्त व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, देश-विदेशगत विरोधों को समाप्त कर सकता है।

प्रश्न- (iii)हमारी संस्कृति का मूलाधार क्या रहा है?

उत्तर - हमारी संस्कृति का मूलाधार अहिंसा-तत्त्व रहा है।

प्रश्न- (iv)हमारे नैतिक सिद्धान्तों में किस चीज़ को प्रमुख स्थान दिया गया है? इसका दूसरा रूप क्या है?

अथवा **नैतिक सिद्धान्तों में मुख्य स्थान किसका रहा है?**

उत्तर - हमारे नैतिक सिद्धान्तों में अहिंसा को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसका दूसरा रूप त्याग है। अथवा नैतिक सिद्धान्तों में मुख्य स्थान अहिंसा का रहा है।

प्रश्न- (v) त्याग और स्वार्थ क्या है?

उत्तर - अहिंसा का दूसरा नाम त्याग और हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है।

प्रश्न- (vi) स्वार्थ किस रूप में हमारे सामने आता है?

उत्तर - स्वार्थ प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है।

प्रश्न- (vii) हमारी सभ्यता की विशेषता क्या रही है?

उत्तर - हमारी सभ्यता की विशेषता यह रही है कि इसमें भोग भी त्याग से निकला है और भोग भी त्याग में ही पाया जाता है।

प्रश्न- (viii) हम किसके द्वारा व्यक्ति, समाज और देशों के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं?

उत्तर - हम 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना के द्वारा व्यक्ति, समाज और देशों के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं।

प्रश्न- (ix) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना से क्या ओत-प्रोत है?

उत्तर - हमारी नैतिक चेतना 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना से ओत-प्रोत है।

प्रश्न- (x) पारस्परिक विरोध को कैसे मिटाया जा सकता है?

उत्तर - पारस्परिक विरोध को 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना के द्वारा मिटाया जा सकता है।

(4)जिन हालातों में पड़कर संसार की प्रसिद्ध जातियाँ मिट गईं, उनमें हम न केवल जीवित ही रहे, वरन् अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाए रख सके। उसका कारण यही है कि हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मजबूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक है।

प्रश्न – (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न – (ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या**- विषम से विषम परिस्थिति में भी हमने अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को भी अक्षुण्ण बनाए रखा। इसके पीछे मूलकारण था- हमारी दृढ़ सामूहिक चेतना। इस चेतना का नैतिक आधार समुद्र की अतल गहराइयों से भी गहरा, अनन्त आकाश से भी ऊँचा तथा पर्वतों की दृढ़ता से भी अधिक दृढ़ है।

प्रश्न – (iii) लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

उत्तर - लेखक ने गद्यांश में अपनी सामूहिक चेतना और नैतिकता को बचाए रखने का सन्देश देना चाहा है।

(5)दूसरी बात, जो इस सम्बन्ध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरफ की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सबमें यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसीलिए आन्दोलित हो उठा; क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा। [801 (DC,DF) 2023]

प्रश्न – (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

अथवा **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर- **सन्दर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न – (ii)रेखांकित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या-** किसी समूह की एक जैसी सोच अथवा विचारधारा ही वस्तुतः संस्कृति कहलाती है। हमारे देश की संस्कृति की यही विशेषता है कि उसमें विविधता होते हुए भी किसी एक बिन्दु पर जाकर समानता अवश्य दृष्टिगोचर होती है। यही समानता अथवा एकता ही हमारे देश की जीवन्तता का मूलतत्त्व अर्थात् प्राण है। हमारे मन-मस्तिष्क में बसी एकता की यही नैतिक भावना हमें असंख्य नगर, ग्राम,

प्रदेश, सम्प्रदाय, जाति और वर्ग आदि में बँटा होने के बाद भी आपस में एक-दूसरे से जोड़े हुए है और उसी जुड़ाव के कारण हम सब स्वयं को एक ही जाति भारतीयता का अंग मानते हैं। एक जाति और एक भारतमाता की सन्तान होने के कारण हम आपस में भाई हैं। एकता का ऐसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं दृष्टिगत होता। विभिन्न जाति, धर्म और प्रदेश में बँटा होने के कारण हमारी वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन और भाषा में विभिन्नता दिखती ही है, फिर भी भारतीयता की भावना हमें एक बनाती है। हमारे भीतर एक-दूसरे से लगाव और अपनत्व की इस भावना का अत्यधिक महत्त्व है। इसके महत्त्व को महात्मा गांधी ने भली-भाँति पहचाना और इसका राष्ट्र तथा जनहित में

उपयोग भी किया। महात्मा गांधी ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए जिस क्रान्ति का आह्वान किया,उसका मूलाधार जनसाधारण की भावनात्मक एकता ही थी।

प्रश्न – (iii)लेखक ने भारतीय संस्कृति की एकता और उसके बल का क्या महत्त्व बताया है?

उत्तर- लेखक ने भारतीय संस्कृति की एकता और उसके बल के महत्त्व को बताते हुए स्पष्ट किया है कि इसी को हथियार बनाकर महात्मा गांधी और अन्य बुद्धिजीवी देश में क्रान्ति लाने में सफल हुए जिसके परिणामस्वरूप देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

प्रश्न – (iv)क्रान्ति के लिए बापू ने किसका सहारा लिया था?

उत्तर- क्रान्ति के लिए बापू ने नैतिक चेतना का सहारा लिया था।

प्रश्न – (v)जनसाधारण किन बातों से आन्दोलित हो उठा और क्यों ?

उत्तर- जनसाधारण अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से आन्दोलित हो उठा। क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा।

(6)**मैं तो यही समझता हूँ कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं तो हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए, अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए। वैयक्तिक स्वार्थों और**

स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्त्तव्य और सेवा-निष्ठा पर जोर देना चाहिए और हमारी प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तौली जानी चाहिए।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या- भारतीय समाज और भारत देश पर तरह-तरह के अत्याचार और अनाचार होते रहे हैं, जिनके कारण संघर्षों का जन्म हुआ। यदि हम चाहते हैं कि समाज और देश में इस तरह के अत्याचार न हों, उनको फिर से दोहराया न जाए,

तो इसका एकमात्र उपाय आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन लाना है। हमें एक ऐसी नई अर्थव्यवस्था तैयार करनी होगी, जिसकी नींव त्याग की भावना पर रखी जाए; क्योंकि त्याग की भावना ही भारतीय संस्कृति का मूल आधार है।हम जो भी कार्य करें, उसको कर्त्तव्य और लोक-कल्याण की कसौटी पर परखना चाहिए। आज हम अत्यधिक स्वार्थी हो गए हैं और हमारा प्रत्येक कार्य व्यक्तिगत हित पर आधारित हो गया है। भारतीय समाज को नया रूप प्रदान करना तभी सम्भव हो सकेगा, जब व्यक्तिगत हित का लोक-कल्याण के लिए बलिदान कर दिया जाए एवं अधिकार प्राप्त करने के लिए कर्त्तव्यों का पालन किया जाए। इसके अतिरिक्त जब व्यक्ति प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन कर्त्तव्य और

सेवाभावरूपी तराजू से करेगा तब ही हमारा देश स्वार्थप्रेरित संघर्षों से मुक्ति प्राप्त कर सकेगा और हमारी भारतीय संस्कृति की मूलभूत चेतना फिर से कार्य करने लगेगी।

प्रश्न- (iii) देश और समाज में व्याप्त सारे संघर्षों को हम किस प्रकार दूर कर सकते हैं?

उत्तर- हम अपनी आर्थिक व्यवस्था को ऐतिहासिक, नैतिक चेतना **अथवा**संस्कृति के आधार पर बनाकर देश और समाज में व्याप्त सारे संघर्षों को दूर कर सकते हैं।

प्रश्न- (iv) देश और समाज में संघर्ष क्यों उत्पन्न होते हैं?

उत्तर- अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति के देश और समाज में संघर्ष उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न-(v) आर्थिक व्यापार करने में किस भावना की प्रधानता होनी चाहिए?

अथवा **हमारे देशवासियों के आर्थिक व्यापार किस भावना से प्रेरित होने चाहिए?**

उत्तर- आर्थिक व्यापार करने में वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना की प्रधानता होनी चाहिए।

प्रश्न-(vi) हमारी प्रत्येक कार्यवाही किस तराजू पर तौली जानी चाहिए?

उत्तर- हमारी प्रत्येक कार्यवाही वैयक्तिक कर्त्तव्य और सेवा-निष्ठा की तराजू पर तौली जानी चाहिए।

प्रश्न-(vii) अन्यायों और अत्याचारों को रोकने का उपाय क्या है?

उत्तर- अन्यायों और अत्याचारों को रोकने का उपाय है कि हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए।

(7)आज विज्ञान मनुष्यों के हाथों में अद्भुत और अतुल शक्ति दे रहा है,उसका उपयोग एक व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष और दूसरे व्यक्ति और समूह के गिराने में होता ही रहेगा। इसलिए हमें उस भावना को जाग्रत रखना है और उसे जाग्रत रखने के लिए कुछ ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा, जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग- भावना को दबाए रखें। नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती। वह नैतिक अंकुश यह चेतना या भावना ही दे सकती है। वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियंत्रित भी।

अथवा **आज विज्ञान** .... **हितकर नहीं होती।**

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

प्रश्न- (i)उपर्युक्त अवतरण का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा **उपर्युक्त गद्यांश का** सन्दर्भ **लिखिए।**

उत्तर - **सन्दर्भ** - प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए|

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - आधुनिक युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है। विज्ञान ने मानव को असीमित शक्तियाँ प्रदान की हैं। विज्ञान से प्राप्त इस शक्ति का प्रयोग कुछ लोग अपनी उन्नति के लिए करते हैं, किन्तु कुछ लोग दूसरों का विनाश करने के लिए भी इसका उपयोग करते हैं। विज्ञान की शक्ति प्राप्त करके प्रत्येक व्यक्ति, समूह

अथवा राष्ट्र अपने विपक्षी व्यक्ति, समूह **अथवा** राष्ट्र को हानि पहुँचाने **अथवा** उसे नष्ट कर देने के प्रयासों में लगा हुआ है; अत: हमें ऐसी भावना विकसित करनी होगी, जिससे मानव द्वारा विज्ञान की शक्ति का दुरुपयोग न हो सके। इस भावना को जाग्रत करने के लिए निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। ऐसी भावना का विकास केवल नैतिकता से हो सकता है।

प्रश्न- **(iii)विज्ञान ने आज क्या किया है?**

अथवा **आज विज्ञान मनुष्य को क्या दे रहा है?**

अथवा **आज विज्ञान मनुष्य के हाथ में कैसी शक्ति दे रहा है?**

उत्तर - विज्ञान ने आज मनुष्य के हाथों में अद्भुत और अलौकिक शक्तियाँ प्रदान की हैं।

प्रश्न- **(iv)आज विज्ञान का उपयोग किस रूप में किया जा रहा है?**

उत्तर- आज विज्ञान का उपयोग एक व्यक्ति **अथवा** समूह के उत्कर्ष तथा दूसरे व्यक्ति **अथवा** समूह को गिराने के लिए किया जा रहा है।

प्रश्न- **(v)लेखक किस प्रकार के साधनों को अपने हाथ में रखने का परामर्श दे रहा है?**

उत्तर- लेखक उन साधनों को अपने हाथ में रखने का परामर्श दे रहा है, जो अहिंसात्मक त्याग- भावना को प्रोत्साहित करें और भोग- भावना को दबाए रखें।

प्रश्न- **(vi)मानव-शक्ति कब हितकर नहीं होती?**

उत्तर- जब मानव-शक्ति पर नैतिक अंकुश नहीं होता, तब वह हितकर नहीं होती।

प्रश्न- **(vii)नैतिक अंकुश किस चेतना या भावना को जन्म दे सकता है?**

उत्तर- नैतिक अंकुश अहिंसात्मक त्याग भावना को जन्म दे सकता है।

प्रश्न- **(viii) उपर्युक्त अवतरण में लेखक ने मानव को क्या सन्देश दिया है?**

अथवा **विज्ञान के सम्बन्ध में लेखक का क्या विचार है? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - इस अवतरण में लेखक ने मानव को यह सन्देश दिया है कि नैतिक अंकुश के द्वारा उत्पन्न अहिंसात्मक त्याग-भावना ही विज्ञान की शक्ति को परिमित और उसके उपयोग को नियन्त्रित कर सकती है।

प्रश्न- **(ix) विज्ञान की शक्ति के सन्तुलित उपयोग के लिए किस भावना को जाग्रत रखना आवश्यक है?**

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

उत्तर - विज्ञान की शक्ति के सन्तुलित उपयोग के लिए हमें नैतिकता के अंकुश पर आधारित उस भावना को जाग्रत रखना आवश्यक है, जिसमें मानव जाति के विनाश के स्थान पर उसके कल्याण का भाव निहित हो।

(8)वर्तमान युग में भारतीय संस्कृति के समन्वय के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुन्दर और आनन्दप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगों को कैसे चखाया जाय। मैं समझता हूँ कि इस बारे में दो बातें विचारणीय हैं। क्या इस सम्बन्ध में यह उचित नहीं होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक संस्थाएँ उस भाषा की कृतियों को संघ-लिपि अर्थात् देवनागरी में छपवाने का आयोजन करें। मुझे विश्वास है कि कम से-कम जहाँ तक उत्तर की भाषाओं का सम्बन्ध है, यदि वे सब अपनी कृतियों को

देवनागरी में छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत के लोग आसानी से ले सकेंगे, क्योंकि इन सब भाषाओं में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषा की कृतियों को स्वल्प परिश्रम से समझ जायेगा।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ** - प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड 'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं। इसमें लेखक ने नैतिक अंकुश के साथ विज्ञान की शक्ति के उपयोग की आवश्यकता के विषय में बताया है।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंशों में से किसी एक अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या–यहाँ लेखक सुझाव देता है कि सभी भाषाओं की कृतियों का दूसरे प्रदेशों की सभी भाषाओं में अनुवाद किया जाना सम्भव नहीं है; किन्तु उन सबका भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की देवनागरी लिपि में अनुवाद करने में कोई समस्या नहीं है। उत्तर भारत की भाषाओं में बहुत साम्य है। यदि इन सभी भाषाओं की सभी कृतियों का भी प्रकाशन देवनागरी लिपि में होने लगे तो उत्तर भारत के सभी भाषा-भाषी दूसरी भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन सरलता से करने लगेंगे।

प्रश्न- (iii) कृतियों को देवनागरी लिपि में छपवाने का क्यों सुझाव दिया गया है?

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

उत्तर- कृतियों को देवनागरी लिपि में छपवाने का सुझाव इसलिए दिया गया है; क्योंकि ऐसा होने से वह साहित्य देश के अधिक-से-अधिक लोगों के लिए उपयोगी हो सकेगा।